आगे बढ़, जल बचा

जगदीश प्रसाद तिवारी

प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।
आज तो क्या, देख न पाते हम कल।।
व्यतीत होती चली जाती
पता नहीं कितनी सदी,
देखने को मिलते नहीं
जल-प्रपात और नदी,
सुनाई नहीं देती लहरों की कर्णप्रिय कलकल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।
यत्र-तत्र और सर्वत्र
महकते नहीं कभी फूल,
दूर-दूर तक देखने को
मिलते नहीं अनुपम शूल,
शांत सरोवर में खिलते नहीं कोमल कमल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।
रोते-रोते रहते सदा
फैले समुद्र सभी विशाल,
युगों तक सूखे ही पड़े
रहते झील और ताल,
सूर्य की घोर तपन से धरती भी जाती जल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।
बन न पाता प्राणियों का
"धक-धक" करता हृदय,
हो न पाता कभी यहां
पर कोशिकाओं का उदय,
सुनने को नहीं मिलती सांसों की हलचल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।
सामने नहीं होता हमारे
वनस्पतियों का संसार,
उमड़ते-घुमड़ते रहते भयावह
गर्म-गर्म गैसों के गुब्बार,
चलायमान कुछ न रहता, सब कुछ रहता अचल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।
गुनगुनाने को भी नहीं
मिलती पानी की कहानी,
मछली को कोई भी नहीं
कहते जल की रानी,
शुष्क रहते होंठ, मुख से कुछ न पाता निकल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।
अब तो जरा कुछ सोच
आज के ओ भोले मानव,
बस, आगे बढ़, जल बचा
करके बता कुछ अभिनव,
प्रदूषण से मुख मोड़, चल, निसर्ग के पास चल।
प्रकृति अगर इस पृथ्वी पर नहीं बनाती जल।।

श्री जगदीश प्रसाद तिवारी
अध्यक्ष, अखिल भारतीय काव्य, कथा एवं कला परिषद,
2425, गाड़ी अड्डा, हाट मैदान,
महू - 453441, जिला-इंदौर (म.प्र.)